भारत का सामाजिक परिवेश

*अबरार खान

भारत का सामाजिक परिवेश विशाल, विविध, और समृद्धि से भरा हुआ है। यहाँ विभिन्न धार्मिक, भाषाई, सांस्कृतिक, और जातिवादी अंतराल के साथ लोग एक साथ रहते हैं। सामाजिक विविधता, लोकतांत्रिक संरचना, और समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करते हुए भारतीय समाज ने समय के साथ बदलाव का सामना किया है। समाज में सामाजिक न्याय, उच्चतम स्तर की शिक्षा, और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच में सुधार करने की दिशा में कदम बढ़ाना महत्वपूर्ण है ताकि सभी वर्गों के लोगों को बराबरी का अधिकार मिले। सामाजिक परिवेश में समय-समय का बदलाव होते रहते हैं। इन परिवर्तनों के विभिन्न कारक होते हैं जो किसी न किसी रूप से सामाजिक परिवेश को प्रभावित करते रहते हैं।

सभी कारकों पर विश्लेषण करने से पूर्व हमें सामाजिक परिवर्तन को समझना अति आवश्यक है

सामाजिक परिवर्तन :-

समाज के किसी भी क्षेत्र में विचलन को सामाजिक परिवर्तन कहा जा सकता है। विचलन का अर्थ यहाँ खराब या असामाजिक नहीं है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, नैतिक, भौतिक आदि सभी क्षेत्रों में होने वाले किसी भी प्रकार के परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहा जा सकता है। यह विचलन स्वयं प्रकृति के द्वारा या मानव समाज द्वारा योजनाबद्ध रूप में हो सकता है। परिवर्तन या तो समाज के समस्त ढाँचे में आ सकता है अथवा समाज के किसी विशेक्ष पक्ष तक ही सीमित हो सकता है। परिवर्तन एक सर्वकालिक घटना है। यह किसी-न-किसी रूप में हमेशा चलने वाली प्रक्रिया है। परिवर्तन क्यों और कैसे होता है, इस प्रश्न पर समाजशास्त्री अभी तक एकमत नहीं हैं। इसलिए परिवर्तन जैसी महत्वपूर्ण किन्तु जटिल प्रक्रिया का अर्थ आज भी विवाद का एक विषय है। किसी भी समाज में परिवर्तन की क्या गति होगी, यह उस समाज में विद्यमान परिवर्तन के कारणों तथा उन कारणों का समाज में सापेक्षिक महत्व क्या है, इस पर निर्भर करता है। सामाजिक परिवर्तन के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए यहाँ इसकी प्रमुख विशेषताओं की चर्चा अपेक्षित है-

'इंटरनेशनल एनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइन्सेज' के अनुसार- 'सामाजिक ढाँचे या लोगों के पारस्परिक व्यवहार में आये महत्वपूर्ण बदलाव ही सामाजिक परिवर्तन है।" बदलाव किसी समाज के मानदंडों, जीवन-मूल्यों, सांस्कृतिक उपादानों और प्रतीकों में भी आ सकता है।

मैकाइवर व पेज ने अपनी प्रमुख पुस्तक 'सोसायटी' में सामाजिक परिवर्तन को परिभाषित करते हुए लिखा है कि "समाजशास्त्री होने के नाते हमारा प्रत्यक्ष सम्बन्ध सामाजिक सम्बन्धों से है और उसमें आये हुए परिवर्तन को हम सामाजिक परिवर्तन कहेंगे।"

किंग्सले डेविस (ह्यमन सोसायटी) के अनुसार, 'सामाजिक परिवर्तन का तात्पर्य सामाजिक संगठन, अर्थात समाज की संरचना एवं प्रकार्यों में परिवर्तन से है। समाज की विभिन्न इकाइयों यथा संस्थाएं, समुदाय, समितियों आदि में परिवर्तन होता है, साथ ही इन परिवर्तनों से प्रकार्यों में भी परिवर्तन होता है।"

एच० एम० जॉनसन (सोसायटी) के अनुसार, "अपने मूल रूप में सामाजिक परिवर्तन का तात्पर्य सामाजिक संरचना में परिवर्तन से है। इन्होंने सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन, संस्थात्मक परिवर्तन, सम्पदाओं और पुरस्कारों के वितरण में परिवर्तन, कार्मिकों में परिवर्तन तथा कार्मिकों की अभिवृत्तियों अथवा योग्यताओं में परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन माना है।"

विल्वर्ट मूर (सोशल चेंज) ने परिवर्तन की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "सामाजिक परिवर्तन सामाजिक संरचना में महत्वपूर्ण बदलाव है।"

सामाजिक परिवर्तन, समाज में बदलाव लाते हैं और लोगों के जीवन पर प्रभाव डालते हैं। इन परिवर्तनों के पीछे रहे कारकों में तकनीकी, आर्थिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक पहलुओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। भारतीय सामाजिक परिवेश कई कारकों से प्रभावित होता है जैसे कि-

• विविधता में एकता :-

विविधता में एकता एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है जो समाज में समरसता और सामंजस्य की स्थापना में मदद करता है। जब हम सभी विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक, भाषाई और जीवनशैली में अनूठे होते हैं, तो एकता का महत्व बढ़ता है। इससे हम एक दूसरे की समझ और समानता की महत्वपूर्णता को समझते हैं, जिससे एक सशक्त और समृद्ध समाज की दिशा में कदम बढ़ाते हैं।

• जाति अवधारणा, उत्पत्ति एवं संरचना:-

जाति एक समाज में व्यक्तियों को उनकी जन्म के आधार पर वर्गीकृत करने वाली सामाजिक व्यवस्था है। यह एक पुराना और सांस्कृतिक तंत्र है जो भारतीय समाज में प्रचलित है, लेकिन इसने समाज में विभाजन और असमानता को बढ़ावा दिया है। जातिवाद ने व्यक्ति के कौन है और कैसा है को उसकी जाति के आधार पर मूल्यांकन करने में एक बड़ा हथियार बनाया है, जिससे समाज में असमानता और बुराइयों का समर्थन होता है। हमें इस परिस्थिति को जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है और शिक्षा के माध्यम से समाज को जातिवाद से मुक्ति प्राप्त करने के लिए सक्रिय रूप से काम करना चाहिए। एक समृद्ध और समान समाज की दिशा में प्रयासरत रहना आवश्यक है, जिसमें सभी व्यक्तियों को बराबरी, न्याय, और समानता का अधिकार हो।

• संस्कृतिकरण :-

संस्कृतिकरण एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें एक समुदाय अन्य सांस्कृतिक प्रभावों को अपनाता है और अपनी सांस्कृतिक विशेषताओं को सुधारता है। यह एक सकारात्मक प्रक्रिया हो सकती है जो सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखने के साथ-साथ नई विचारधारा और प्रवृत्तियों को अपनाने का भी प्रयास करती है।

संस्कृतिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से निम्न जातियाँ, उच्च जातियों के रीति-रिवाजों एवं रस्मों का अनुकरण करके सामाजिक गतिशीलता को प्राप्त करने का प्रयास करती हैं। यह एक सांस्कृतिक प्रक्रिया है, परंतु संस्कृतिकरण के संबंध में लाई गई ऊर्ध्व गतिशीलता के परिणामस्वरूप सामाजिक स्थिति तथा व्यवसायों में परिवर्तन भी इसे एक संरचनात्मक प्रक्रिया बनाता है।

संस्कृतिकरण में, समुदाय अपने ऐतिहासिक, साहित्यिक, कला, और विज्ञान में धनी विरासत को समझता है और उसे बचाए रखने का प्रयास करता है। इसके साथ ही, संस्कृतिकरण नए और सदुपयोगी आदर्शों को प्रोत्साहित करता है जो समुदाय को समृद्धि, समरसता, और सामंजस्य में आगे बढ़ने में मदद कर सकते हैं। हमें संस्कृतिकरण को सही दृष्टिकोण से देखना चाहिए, ताकि यह सामाजिक समृद्धि और एकता के साथ समृद्ध हो सके।

• आधुनिकीकरण

आधुनिकीकरण एक प्रक्रिया है जो समाज, अर्थतंत्र, और तकनीकी दृष्टिकोण से समृद्धि की दिशा में समाज को मोड़ने का प्रयास करती है। यह एक सुधारपूर्ण प्रक्रिया है जो समृद्धि, विकास, और अध्यात्मिकता की ओर सार्थक कदम बढ़ाने का प्रयास करती है। आधुनिकीकरण ने तकनीकी उन्नति, विज्ञान, और सामाजिक संबंधों में बदलाव को प्रोत्साहित किया है, जिससे जीवन को सरल, तेज, और सहायक बनाने का प्रयास किया गया है। इसने व्यक्ति को अधिक जागरूक, सुरक्षित, और आधुनिक बनाने का कारगर तरीका साबित किया है। हमें आधुनिकीकरण को सुनिश्चित रूप से नेतृत्व, नैतिकता, और पर्यावरण से मिलीजुली दृष्टिकोण से देखना चाहिए, ताकि यह समृद्धि के साथ समाज को सशक्त बना सके।

• परिवार व्यवस्था

परिवार व्यवस्था एक समाज में महत्वपूर्ण स्थान रखती है, और यह व्यक्ति के जीवन को संरचित और समृद्धि से भरपूर बनाने में मदद करती है। परिवार एक साझेदारी है जो समृद्धि, समरसता, और सामंजस्य की भावना को साझा करती है।

परिवार व्यवस्था न केवल आधारभूत जीवन की शिक्षा देती है, बल्कि यह भावनात्मक समर्थन, समर्पण, और सहयोग की भावना को बढ़ावा देती है। एक समृद्ध परिवार सदस्यों को आत्मविश्वास, आत्मसमर्पण, और समरसता सिखाता है, जिससे उन्हें सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से सशक्त बनाता है। हमें परिवार व्यवस्था को सुरक्षित, सुदृढ़, और समृद्धिशील बनाए रखने के लिए समृद्ध प्रयास करना चाहिए, जिससे समाज में समरसता और सहयोग की भावना को बढ़ावा मिले।

परिवार का महत्व सिर्फ व्यक्तिगत स्तर पर ही नहीं, बल्कि समाज के लिए भी है। एक सुशिक्षित, समर्पित और सजीव परिवार समाज को सशक्त बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके माध्यम से सामाजिक मूल्यों, संस्कृति और नैतिकता का विवेचन होता है जो आगे बढ़ने की दिशा में मदद करता है। परिवार के सदस्यों के बीच संबंध और समर्थन की भावना से भरा होना चाहिए, जिससे आत्म-समर्थन और समर्पण में वृद्धि हो। इसके अलावा, समृद्ध परिवार समाज में अच्छी नागरिकता, उच्च शिक्षा और अच्छे सामाजिक मूल्यों का समर्थन करता है। इस प्रकार, परिवार व्यवस्था समृद्धि और समरसता की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान कर सकती है।

• **शिक्षा:-**

समाज में शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक समृद्ध, समरसता और सामंजस्य में मदद करने वाला माध्यम है। शिक्षा समाज के सभी वर्गों को ज्ञान, सृजनात्मकता, और नैतिक मूल्यों के साथ समर्थ बनाने में मदद करती है। शिक्षा समाज में सामाजिक और आर्थिक असमानता को कम करने, जागरूकता फैलाने, और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का साधन है। यह व्यक्ति को स्वतंत्र और समर्थ नागरिक बनाने में मदद करती है जो समाज में सक्रिय रूप से योगदान कर सकता है। शिक्षा न केवल ज्ञान बढ़ाती है, बल्कि यह सोचने, समझने और समस्याओं का समाधान करने की क्षमता को भी विकसित करती है। एक शिक्षित समाज में न्याय, स्वतंत्रता और समरसता की भावना बढ़ती है, जिससे समृद्धि और सामाजिक समुदाय का विकास होता है।

भारतीय समाज की सशक्तिकरण की दिशा में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा के माध्यम से लोगों को जागरूक बनाने, सामाजिक बुराइयों का सामना करने, और विभिन्न सामाजिक समस्याओं का समाधान करने का एक माध्यम मिलता है। हालांकि, शिक्षा के क्षेत्र में उच्च और न्यूनतम स्तर के बीच अंतर बना हुआ है और इस पर सामाजिक न्याय की दृष्टि से काम करना आवश्यक है। सांस्कृतिक रूप से, भारतीय समाज में विवाद और सहमति के क्षेत्र में एक सामंजस्यपूर्ण सामाजिक परिवर्तन देखा जा रहा है। लोगों की विचारधार में बदलाव, मीडिया के प्रभाव, और युवा पीढ़ी की सकारात्मक भूमिका ने समाज में नए दृष्टिकोणों को प्रोत्साहित किया है।

• **आर्थिक समानता:-**

आर्थिक समानता के क्षेत्र में भारतीय समाज में सुधार हो रहा है, लेकिन अभी भी कई स्थानों पर समस्याएं बनी हुई हैं। भारत में गाँवों और शहरों के बीच अंतर, और उत्तर-पश्चिम और दक्षिण-पूर्व क्षेत्रों में सामाजिक असमानता का सामना किया जा रहा है। समृद्धि की दिशा में, भारतीय समाज ने अभूतपूर्व तेजी से आर्थिक और तकनीकी विकास की ओर कदम बढ़ाया है, लेकिन इसके साथ ही समर्थन और सुरक्षा की चुनौतियों का सामना भी कर रहा है। समस्याओं और सफलताओं के बावजूद, भारत का सामाजिक परिवेश एक निरंतर प्रक्रिया में है, जो सामाजिक न्याय, सामाजिक समृद्धि, और समृद्धि की दिशा में बदल रहा है।

भारतीय समाज में साहित्य, कला, और विज्ञान में नई रचनात्मकता का सृजन हो रहा है जिससे समृद्धि और आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा जा रहा है। यह रचनात्मकता सामाजिक समस्याओं के समाधान में भी सहायक हो सकती है।

निष्कर्ष:-

सम्पूर्ण रूप से, भारतीय समाज ने अपने सामाजिक परिवेश में सुधार के प्रति संकल्पित है, लेकिन इसके साथ ही यह भी सतत रूप से बदल रहा है और समृद्धि की दिशा में प्रगति कर रहा है । भारतीय समाज में धर्मनिरपेक्षता एक महत्वपूर्ण मुद्दा है जिसने समाज को एक मेलजोल और सहमत स्थिति में ले जाने की कोशिश की है। हालांकि, इस पर भी चुनौतियाँ हैं और कई स्थानों पर सामाजिक समृद्धि की दिशा में बदलाव की आवश्यकता है।

सामाजिक न्याय, जेंडर इक्वलिटी, और समृद्धि की दिशा में अधिक सामाजिक समर्थन और जागरूकता की

जरूरत है, ताकि समृद्धि सार्थक और समाज के सभी वर्गों के लिए समान रूप से हो सके।

इस समय, भारतीय समाज को सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक दृष्टि से सहज स्थिति में लाने के लिए एक सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है, ताकि यह विश्व में अपनी अद्वितीयता और समृद्धि में एक नेतृत्व भूमिका निभा सके।

***कंप्यूटर प्रशिक्षक**
राजकीय महाविद्यालय, करौली (राज.)

संदर्भ-

1. https://www.rawatbooks.com/sociology/Bhartiya-samajik-vyavastha-paperback
2. https://hi.wikipedia.org/wiki/सामाजिक_परिवर्तन
3. इंटरनेशनल एनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइन्सेज
4. मैकाइवर व पेज ने अपनी प्रमुख पुस्तक 'सोसायटी',
5. किंग्सले डेविस (ह्यमन सोसायटी)
6. विल्वर्ट मूर (सोशल चेंज)
7. https://www.drishtiias.com/hindi/mains-practice-question/question-3357